सं श्रो.वि/सोनीपत/125-83/57772. - पूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राए है कि मैं हरियाणा एग्रो-इन्डस्ट्रीज कारपोरेशन लि. सोनीपत, के श्रीमक श्री हवा सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रिधिसूचना सं 3864-ए.एस.ग्रो. (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हवासिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? ,

सं.श्रो.वि /रोहतक/ 133-83/ 57786.—-चंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हिन्दुस्तान सैनेट्रीवेयर एण्ड इण्ड-स्ट्रीज लि., वहादुरगढ़ के श्रमिक श्री शिव कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके वाद/लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है ;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्टिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अव, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ओ.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री शिव कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्रो वि /श्रार टी के ./ 171-83/57800.—चूंकि हरियाण। के राज्यपाल की राय है कि मैं महा प्रवन्धक जिला कन्फैंड श्राफिस ग्रीन रोड, शास्त्री नगर, रोहतक के श्रमिक श्री राम किशन तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिए, मब, मौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई मिलियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573. दिनांक 6 नवभ्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.मो.(ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठिग श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्वन्धित मामला है:—

क्या श्री राम किशन की सेवाग्रो का समापन न्यायोचित तथा ठीक हैं? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ओ.वि./रोहतक/170-83/57814.-चूंकि हरियाणा के राज्यनाल की राय है को में. महा प्रक्रवक जिता कन्केड आफिस ग्रीन रोड, शास्त्री नगर, रोहतक के श्रमिक श्री आजाद सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद/लिखि मामले में कोई ग्रीधो-ें गिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपालू विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना वांछर्नीय समझते हैं ;

इस लिए , श्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रीविनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित् सरकारी अधिसूचना सं. 3864-ए.एस.ब्रो. (ई)श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उन्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंग तथा उससे सम्बन्धित नीवे लिखा मामला न्यायिनग्य हेतु किदिष्ट बारते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिंक के बीच या तो विवादग्रस्त मामल है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री, श्रीजाद सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.श्रो.वि./रोहतक/113-83/57821---चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. डायमन्ड स्टील वर्कस बहादुरगढ़ (रोहतक के श्रमिक श्री श्रोम प्रकाण तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करने वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रवित्वचना सं. 9641-1श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रवित्वचना सं. 3864-ए.एस.श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रवित्यम की धारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनग्य होतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

वय श्री श्रोम प्रक.श की सेवत्थ्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./सोनीपत/148-83/57828----चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. प्रशासक नगर पालिका गन्नौर (सोनीपत) के श्रमिक श्री सुरेश कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद/लिख़ त मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भ्रोर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुए, हिस्सणा के राज्यवाल इसके द्वार, सरकारी श्रिधसूचना सं 9641-1-श्रम-70/32573 दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पिटत सरकारी श्रिधसूचना सं 3864-एइएस श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंठगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री सुरेश कुमार की सेवाओं का समापन त्यायोचिंग तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 8 नवम्बर, 1983

सं. द्यो.वि./जी.जी.एन./52-83/58334.--चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० उप-मण्डल ग्रधिकारी हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, नागल चौधरी, महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री सावत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

धीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक, 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन. गठितु श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यावनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबंधित मामला है:—

नया श्री सावत की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?